Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue No. VII, July-2012, ISSN 2230-7540

भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी का योगदान

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue No. VII, July-2012, ISSN 2230-7540

भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी का योगदान

Dr. Ashok Arya*

Lecturer, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध पत्र सारांश: - *इस शोध पत्र में, भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी के योगदान का अध्ययन किया गया है। इंदिरा गांधी भारत की चैथी और पहली महिला प्रधानमंत्री थीं। वह एक ऐसी महिला थीं, जिन्होंने न केवल भारतीय राजनीति बल्कि विश्व राजनीति के क्षितिज पर भी उल्लेखनीय प्रभाव छोड़ा। इस कारण उसे आयरन वुमन के नाम से भी जाना जाता है। वह भारत के पूर्व प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू की एकमात्र संतान थे और नेहरू के प्रधानमंत्री रहते ही सरकार में अच्छी पकड़ बना ली थी। इंदिरा गांधी को एक राजनीतिक नेता के रूप में बहुत निर्दयी माना जाता है। प्रधान मंत्री के रूप में, उन्होंने प्रशासन को आवश्यकता से अधिक केंद्रीकृत किया। उनके शासनकाल के दौरान, भारत में एकमात्र आपातकाल लगाया गया था और सभी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को जेल में डाल दिया गया था। किसी ने भी भारत के संविधान के मूल रूप में उतना संशोधन नहीं किया है जितना कि उसके शासनकाल में हुआ था। यह उनके शासन के दौरान बांग्लादेश मुद्दे पर भारत-पाक युद्ध हुआ था और बांग्लादेश का जन्म हुआ था। पंजाब से आतंकवाद का सफाया करने के लिए, उन्होंने अमृतसर में सिखों के पवित्र स्थल 'स्वर्ण मंदिर' में सेना और सुरक्षा बलों द्वारा 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' चलाया। कुछ महीने बाद, उनके अंगरक्षकों द्वारा उनकी हत्या कर दी गई। इंदिरा गांधी को भारतीय इतिहास में हमेशा उनकी प्रतिभा और राजनीतिक किस्मत के लिए जाना जाता है।*

शब्द कुंजीः - *जीवन का परिचय, इंदिरा गांधी के नाम पर विरासत, इंदिरा गांधी के पुरस्कार, स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी, राजनीतिक जीवन, प्रधानमंत्री पद,* 1971 *के मध्यावधि चुनाव, पाकिस्तान के साथ युद्ध, पाकिस्तान के साथ युद्ध के बाद की स्थिति, इमरजेंसी (*1975 - 1977), *पावर पर वापस, ऑपरेशन ब्लू स्टार और हटिया।*

----------X----------

जीवन परिचय:

इंदिरा गांधी का जन्म 19 नवंबर 1917 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में एक प्रसिद्ध नेहरू परिवार में हुआ था। उनका पूरा नाम 'इंदिरा प्रियदर्शिनी' था। उनके पिता जवाहरलाल नेहरू थे और दादा मोतीलाल नेहरू थे। जवाहरलाल और मोतीलाल दोनों सफल वकील थे और दोनों ने स्वतंत्रता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। इंदिरा की माता का नाम कमला नेहरू था। उनका परिवार आर्थिक और बौद्धिक रूप से बहुत समृद्ध था। उनके दादा मोतीलाल नेहरू ने उनका नाम इंदिरा रखा था।

इंदिरा दिखने में बहुत प्रिय थीं, इसलिए पंडित नेहरू उन्हें 'प्रियदर्शिनी' के नाम से बुलाते थे। माता-पिता का आकर्षक व्यक्तित्व इंदिरा को विरासत में मिला था। इंदिरा गांधी को बचपन में एक स्थिर पारिवारिक जीवन नहीं मिला क्योंकि उनके पिता हमेशा स्वतंत्रता आंदोलन में व्यस्त थे और जब वह 18 साल की थीं, तब उनकी मां कमला नेहरू भी तपेदिक से गुजर गईं।

पिता की राजनीतिक व्यस्तता और माँ के खराब स्वास्थ्य के कारण जन्म के कुछ वर्षों बाद भी इंदिरा को शिक्षा का अनुकूल वातावरण नहीं मिल पाया। राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा दिन और रात की यात्राओं के कारण घर का माहौल भी पढ़ाई के अनुकूल नहीं था, इसलिए पंडित नेहरू ने अपनी शिक्षा के लिए घर पर शिक्षकों की व्यवस्था की थी। इंदिरा अंग्रेजी के अलावा किसी भी विषय में कोई विशेष कौशल हासिल नहीं कर सकीं। इसके बाद, उन्हें गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित 'शांति निकेतन' के 'विश्व-भारती' पढ़ने के लिए भेजा गया। इंदिरा ने इसके बाद लंदन के बैडमिंटन स्कूल और ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन किया, लेकिन वह पढ़ाई में कोई विशेष कौशल नहीं दिखा सकीं और एक औसत दर्जे की छात्रा बनी रहीं।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय, उनकी अक्सर लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में पढ़ रहे फिरोज गांधी से मुलाकात हुई। इंदिरा फिरोज को इलाहाबाद से ही जानती थी। भारत लौटने पर, 16 मार्च 1942 को इलाहाबाद के आनंद भवन

www.ignited.in

में दोनों का विवाह हुआ। ऑपरेशन ब्लू स्टार के ठीक पांच महीने बाद 31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी की दो सिख अंगरक्षकों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

उद्देश्य:

1. इंदिरा गांधी के राजनीति में योगदान का अध्ययन किया गया है।
2. इंदिरा गांधी की शासन नीतियों पर चर्चा की गई है।
3. इंदिरा गांधी की राजनीतिक प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना:

1. इंदिरा गांधी ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. इंदिरा गांधी की राजनीतिक नीतियों का कांग्रेस पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक और राजनीतिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक राजनीतिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। माध्यमिक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

इंदिरा गांधी के नाम पर विरासत

उनके घर को नई दिल्ली में एक संग्रहालय बनाया गया है, जिसे इंदिरा गांधी मेमोरियल संग्रहालय के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, उनके नाम पर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय (अमरकंटक), इंदिरा गांधी तकनीकी विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय (रायपुर) जैसे कई विश्वविद्यालय हैं। इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च (मुंबई), इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इंदिरा गांधी ट्रेनिंग कॉलेज, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस आदि कई शैक्षणिक संस्थान हैं। दिल्ली का अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, देश राजधानी, का नाम इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भी है। देश के सबसे प्रसिद्ध समुद्री पुल पम्बन ब्रिज का नाम इंदिरा गांधी रोड ब्रिज भी है। इसके अलावा, देश के कई शहरों में कई सड़कों और चैकों का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है।

इंदिरा गांधी के पुरस्कार:-

इंदिरा गांधी को 1971 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। 1972 में, उन्हें बांग्लादेश को आज़ाद करने के लिए मैक्सिकन अवार्ड से सम्मानित किया गया। फिर 1973 में द्वितीय वार्षिक पदक, एफएओ और 1976 में नागरी प्रचारिणी सभा को हिंदी में साहित्य वाचस्पति से सम्मानित किया गया।

इंदिरा को कूटनीति के साथ उत्कृष्ट कार्य के लिए इटली के इस्बेला डी'एस्ट अवार्ड के अलावा 1953 में यूएसए में मदर्स अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। उन्हें येल विश्वविद्यालय के हॉलैंड मेमोरियल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

1967 और 1968 में फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक ओपिनियन के अनुसार, वह फ्रांसीसी लोगों द्वारा सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली महिला राजनीतिज्ञ थीं।

1971 में यूएसए के विशेष गैलप पोल सर्वे के अनुसार, वह दुनिया की सबसे सम्मानित महिला थीं। उसी वर्ष उन्हें अर्जेंटीना सोसाइटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ़ एनिमल्स द्वारा डिप्लोमा ऑफ़ ऑनर से भी सम्मानित किया गया।

स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी:

इंदिरा बचपन से ही अपने घर पर राजनीतिक माहौल देखती थीं। उनके पिता और दादा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से थे। इस माहौल का असर इंदिरा पर भी पड़ा। उन्होंने युवा लड़कों और लड़कियों की मदद से एक वानर सेना का गठन किया, जिसने विरोध और झंडा जुलूस के साथ-साथ संवेदनशील प्रकाशनों और प्रतिबंधित सामग्री के प्रचलन को अंजाम दिया। लंदन में पढ़ाई के दौरान वह इंडियन लीग की सदस्य भी बनीं। 1941 में इंदिरा ऑक्सफोर्ड से भारत लौटीं। जुड़ने के बाद, वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गईं। उन्हें सितंबर 1942 में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया था जिसके बाद मई 1943 में सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। विभाजन के बाद हुए दंगों और अराजकता के दौरान, इंदिरा गांधी ने शरणार्थी शिविरों के आयोजन और पाकिस्तान से आए शरणार्थियों की देखभाल करने का महत्वपूर्ण काम किया।

राजनीतिक जीवन:-

जवाहरलाल नेहरू को अंतरिम सरकार के गठन के साथ कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनाया गया था। इसके बाद नेहरू की राजनीतिक सक्रियता और बढ़ गई। त्रिमूर्ति भवन में नेहरूजी के निवास पर सभी आगंतुकों के स्वागत की व्यवस्था इंदिरा द्वारा की गई थी। इसके साथ ही एक बूढ़े पिता की जरूरतों की देखभाल की जिम्मेदारी भी इंदिरा पर आ गई। वह पंडित नेहरू की एक विश्वसनीय, सचिव और नर्स बन गई। इंदिरा को पारिवारिक माहौल में राजनीतिक विचारधारा विरासत में मिली और अपने पिता की मदद करते हुए उन्हें राजनीति की भी अच्छी समझ थी। उन्हें वर्ष 1955 में ही कांग्रेस पार्टी की कार्यकारिणी में शामिल किया गया था। पंडित नेहरू उनसे सलाह लेते थे और उनका पालन भी करते थे। धीरे-धीरे पार्टी में इंदिरा का कद बढ़ता गया और महज 42 साल की उम्र में 1959 में वह कांग्रेस की अध्यक्ष भी बनीं। नेहरू के इस फैसले पर कई लोगों ने उन पर पार्टी में फैमिलीवाद फैलाने का आरोप भी लगाया, लेकिन पंडित नेहरू की शक्ति इतनी महान थी कि इन बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं गया। 1964 में नेहरू की मृत्यु के बाद, इंदिरा चुनाव जीतने के बाद शास्त्री सरकार में सूचना और प्रसारण मंत्री बनीं। इंदिरा ने कौशल के साथ इस नए कार्य को पूरा किया और सूचना और प्रसारण मंत्री के रूप में आकाशवाणी के कार्यक्रमों को मनोरंजक बनाया और इसमें गुणात्मक वृद्धि भी की। 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, Air ने राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इंदिरा गांधी युद्ध के दौरान सीमाओं पर गईं और सैनिकों का मनोबल बढ़ाया और उनके नेतृत्व गुणों को दिखाया।

प्रधान मंत्री का पद:

इंदिरा गांधी 4 बार - (तीन बार 1966-1977) और फिर चैथी बार (1980-84) भारत की प्रधान मंत्री थीं। 1966 में भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु के बाद, श्रीमती इंदिरा गांधी को भारत का प्रधानमंत्री चुना गया। उन्होंने 1967 का चुनाव बहुत कम बहुमत से जीता और प्रधानमंत्री बनीं। वह 1971 में भारी बहुमत के साथ फिर से प्रधानमंत्री बनीं और 1977 तक बनी रहीं। वह 1980 में फिर से प्रधानमंत्री बनीं और 1984 तक प्रधान मंत्री का पद संभाला। लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद, कांग्रेस अध्यक्ष के.के. कामराज ने प्रधान मंत्री पद के लिए इंदिरा के नाम का सुझाव दिया, लेकिन वरिष्ठ नेता मोरारजी देसाई ने भी प्रधानमंत्री पद के लिए उनके नाम का प्रस्ताव रखा। इस गतिरोध को कांग्रेस संसदीय दल ने एक वोट के जरिए हल किया और इंदिरा गांधी भारी मतों से विजयी हुईं। 24 जनवरी 1966 को, इंदिरा गांधी ने प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली। 1967 के चुनावों में, कांग्रेस को बहुत नुकसान हुआ लेकिन पार्टी सरकार बनाने में सफल रही। दूसरी ओर, मोरारजी देसाई के नेतृत्व में एक खेमा इंदिरा गांधी का विरोध करता रहा, जिसके परिणामस्वरूप 1969 में कांग्रेस का विभाजन हो गया।

1971 के मध्यावधि चुनाव:

पार्टी और देश में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए, इंदिरा गांधी ने लोकसभा को भंग कर दिया और मध्यावधि चुनाव की घोषणा की, जिसने विपक्ष को झटका दिया। इंदिरा गांधी 'गरीबी हटाओ' के नारे के साथ चुनाव मैदान में उतरीं और धीरे-धीरे चुनावी माहौल उनके पक्ष में बनने लगा और कांग्रेस को बहुत फायदा हुआ। 518 में से कांग्रेस को 352 सीटें मिलीं। चुनाव परिणामों ने यह स्पष्ट कर दिया कि लोगों ने 'ग्रैंड अलायंस' (कांग्रेस (ओ), जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी का गठबंधन) को खारिज कर दिया था। अब केंद्र में इंदिरा गांधी की स्थिति बहुत मजबूत हो गई थी और वह स्वतंत्र निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र थीं।

पाकिस्तान के साथ युद्ध:

1971 में, बांग्लादेश के मुद्दे पर भारत-पाकिस्तान युद्ध छिड़ गया और एक बार फिर पाकिस्तान को परेशानी का सामना करना पड़ा। 13 दिसंबर को, भारतीय सेनाओं ने सभी दिशाओं से ढाका को घेर लिया। 16 दिसंबर को, जनरल नियाज़ी ने 93,000 पाक सैनिकों के साथ हथियार डाले। युद्ध में हार के बाद, जुल्फिकार अली भुट्टो पाकिस्तान के नए राष्ट्रपति बने और उन्होंने भारत से शांति वार्ता का प्रस्ताव रखा जिसे इंदिरा गांधी ने स्वीकार कर लिया और फिर दोनों देशों के बीच शिमला समझौता हुआ। इंदिरा गांधी अमेरिकी शिविर में शामिल नहीं हुईं और सोवियत संघ के साथ दोस्ती और आपसी समर्थन बढ़ा, जिसके परिणामस्वरूप 1971 की लड़ाई में भारत की जीत के लिए पर्याप्त राजनीतिक और सैन्य समर्थन मिला।

पाकिस्तान के साथ युद्ध के बाद की स्थिति:

पाकिस्तान युद्ध के बाद, इंदिरा गांधी ने अपना ध्यान देश के विकास की ओर लगाया। संसद में उनका पूर्ण बहुमत था।

जिसके कारण निर्णय लेने में स्वतंत्रता मिली। उन्होंने 1972 में बीमा और कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया। उनके दोनों फैसलों को जनता का भरपूर समर्थन मिला। इसके अलावा, उन्होंने भूमि सुधार, सामाजिक कल्याण और अर्थव्यवस्था में कई सुधारों को भी लागू किया।

www.ignited.in

आपातकाल (1975 - 1977):

1971 के चुनावों में इंदिरा गांधी को बहुत बड़ी सफलता मिली और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में विकास के नए कार्यक्रमों को लागू करने का प्रयास किया, लेकिन देश के भीतर समस्याएं बढ़ती जा रही थीं। महंगाई के कारण लोग परेशान थे। युद्ध के आर्थिक बोझ के कारण आर्थिक समस्याएं भी बढ़ीं। इस बीच, सूखे और अकाल ने स्थिति को और खराब कर दिया। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बढ़ती कीमतें भारत में मुद्रास्फीति को बढ़ा रही थीं और पेट्रोलियम के आयात के कारण देश के विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से घट रहे थे। कुल मिलाकर, आर्थिक मंदी का दौर चल रहा था जिसमें उद्योग धंधे भी गिर रहे थे। बेरोजगारी भी बहुत बढ़ गई थी और सरकारी कर्मचारी मुद्रास्फीति के कारण वेतन वृद्धि की मांग कर रहे थे। इन सभी समस्याओं के बीच, सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे। सरकार इन सभी समस्याओं से जूझ रही थी कि इस बीच, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के चुनाव से संबंधित एक मामले पर एक महत्वपूर्ण निर्णय की घोषणा करते हुए, उनका चुनाव रद्द कर दिया और उन पर छह साल के लिए चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया। इंदिरा ने इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की और अदालत ने 14 जुलाई का दिन तय किया, लेकिन विपक्ष ने 14 जुलाई तक भी इंतजार नहीं किया। जय प्रकाश नारायण और समर्थित विपक्ष ने आंदोलन को उग्र रूप दिया। इन परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए, 26 जून 1975 को सुबह में आपातकाल घोषित किया गया और जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई और हजारों अन्य बड़े और छोटे नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। सरकारी समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन पर सेंसर किया गया। मौलिक अधिकारों को भी लगभग समाप्त कर दिया गया। इंदिरा ने जनवरी 1977 में लोकसभा चुनाव कराने की घोषणा की और इसके साथ ही राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया। मीडिया की स्वतंत्रता बहाल की गई और राजनीतिक बैठकों और चुनाव प्रचार की स्वतंत्रता दी गई। शायद इंदिरा गांधी स्थिति का सही मूल्यांकन नहीं कर सकीं। अब जनता का समर्थन विपक्ष से मिलने लगा, जिसने विपक्ष को और अधिक शक्तिशाली बना दिया। चुंतजल जनता पार्टी 'के रूप में एकजुट विपक्ष और उसके सहयोगियों ने 542 में से 330 सीटें जीतीं जबकि इंदिरा गांधी की कांग्रेस पार्टी केवल 154 सीटों का प्रबंधन कर सकी।

सत्ता में वापसी:

81 वर्षीय मोरारजी देसी के नेतृत्व वाली जनता पार्टी ने 23 मार्च 1977 को सरकार का गठन किया, लेकिन यह सरकार शुरू से ही आंतरिक संघर्ष से जूझती रही और अंततः सरकार की नजरबंदी के कारण अगस्त 1979 में गिर गई। जनता पार्टी के शासन के दौरान, इंदिरा गांधी पर कई आरोप लगाए गए थे और जांच के लिए कई आयोग नियुक्त किए गए थे। उन पर देश की कई अदालतों में मुकदमा भी चला और श्रीमती गांधी भी सरकारी भ्रष्टाचार के आरोपों में कुछ समय तक जेल में रहीं। एक ओर, जनता पार्टी की दुर्दशा के कारण, उनकी सरकार सभी मोर्चों पर विफल हो रही थी और दूसरी ओर, इंदिरा गांधी के साथ व्यवहार के कारण, जनता इंदिरा गांधी के साथ सहानुभूति बढ़ा रही थी। जनता पार्टी सरकार चलाने में विफल रही और देश को मध्यावधि चुनाव का बोझ उठाना पड़ा। इंदिरा गांधी ने आपातकाल के लिए जनता से माफी मांगी, जिसके परिणामस्वरूप उनकी पार्टी 592 में से 353 सीटें जीत गई और इंदिरा गांधी फिर से प्रधानमंत्री बन गईं।

ऑपरेशन ब्लू स्टार और मर्डर:

भिंडरावाले के नेतृत्व में, पंजाब में अलगाववादी ताकतों ने अपना सिर उठाना शुरू कर दिया और भिंडरावाले को लगा कि उनके नेतृत्व में वह पंजाब का एक अलग अस्तित्व बनाएगा। स्थिति बिगड़ गई थी और ऐसा लग रहा था कि नियंत्रण अब केंद्र सरकार के हाथों से बाहर जा रहा था। दूसरी ओर, भिंडरावाले ने महसूस किया कि वह हथियारों के बल पर एक अलग अस्तित्व बना सकता है। सितंबर 1981 में, भिंडरावाले के आतंकवादी समूह को हरिमंदिर साहिब परिसर के अंदर तैनात किया गया था। आतंकवादियों का सफाया करने के प्रयास में, इंदिरा गांधी ने सेना को धर्मस्थल में प्रवेश करने का आदेश दिया। इस कार्रवाई के दौरान, हजारों लोग जाने गए और सिख समुदाय में इंदिरा गांधी के खिलाफ काफी आक्रोश था। ऑपरेशन ब्लू स्टार के ठीक पांच महीने बाद 31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी की दो सिख अंगरक्षकों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

निष्कर्ष:

दुनिया में भारत की महिलाओं के लिए इंदिरा गांधी का जीवन एक सशक्त पहल है। महिला के रूप में पहचान की गई है। हालांकि, उनके व्यक्तित्व को दो पक्षों से समझा गया है और उनके समर्थकों के साथ-साथ विरोधियों की संख्या काफी है। उनके लिए किए गए कई राजनीतिक और सामाजिक निर्णय भी अक्सर चर्चा का विषय होते हैं, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारत ने इंदिरा गांधी के कार्यकाल में विकास के कई आयाम स्थापित किए थे, और उन्होंने विश्व मंच पर भारत की छवि स्थापित की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. Abbas, K. A.: Indira Gandhi, Hindi Pocket Books, India, 1966.
2. Abdul Kalam Azad: India Wins Freedom, orient Longman, India, 1959,
3. Anand Mohan: Indira Gandhi Human and Political Biography, Meredith Press, New York, 1967.
4. Bhattacharya, V.R.: Indira Gandhi His role in World Peace, Metropolitan Book, New Delhi. 1984.
5. Byrum E. Carter: Office of the Prime Minister Faber, London, 1973.
6. Bright, J.S.: One Year Emergency and 20-point Program, Pankaj, New Delhi, 1976.
7. Chalapathi Rau, M.C.: Indira Gandhi Prime Minister of India, D.A.V.P., India, 1970.
8. Chandra Prakash Agrawal: Indira Gandhi Now and Janata, Hindustan EÛporters, U.P. 1978.
9. Choksi, M.: Indian Indian, East Longman, India, 1975-
10. Crossman, Richard: Inside View, Jonathan Cape, London, 1972.
11. DiÛit, J.N.: Indian Foreign Policy makers, Harper Collins, India, 2004.
12. Dhawan, S.K.: Discovery of Indira Gandhi, Wave Publications, Delhi, 1986.
13. Dhawan, S.K.: Indira Gandhi*s Selected Ideas, Mittal Publications, New Delhi, 1985.
14. India Speaks (Government of India).
15. Proved and Indoor Speeches of India and Bangladesh by Indira Gandhi (Orient & Long-man, Delhi, 1972).
16. K.A. Abbas, Indira Gandhi (Hind Pocket Books, India, 1966).
17. K.A. Abbas, That Woman (India Book Company, Delhi, 1973).
18. Kanwar Lal: Thank you Mrs Gandhi, Anupam Publications, New Delhi, 1977
19. Karanjia, R.K.: Indira & J.P. debate, Chetana Publications, New Delhi, 1975
20. Katherine Frank: The Life of Indira Nehru Gandhi, Harper Collins, 2001.
21. Nayantara Sahgal: Indira Gandhi: Tryst with Power, Penguin, 1984.
22. Khosla GD: Indira Gandhi, Thomson Press, Delhi, 1974.
23. Selected Speeches by Indira Gandhi (Government of India, 1971).

Corresponding Author

Dr. Ashok Arya*

Lecturer, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan